श्री श्याम भजन

तर्ज : छू लेने दो...

अरदास यहीं तुमसे मोहन, कभी दर से दूर नहीं करना
गलती करना फितरत मेरी, गलती पर ध्यान नहीं धरना

काली चमड़ी काला मन है, काले काले जज़बात मेरे
मैं खुद को तुमसे छुपाऊ क्या तुम जान रहे हालात मेरे
काले रंग की परछाई मैं कालुष की बात नहीं करना॥
अरदास यहीं तुमसे.......

ये जीव भरम में डोल रहा, मैं खुद को ख़ुद से तोल रहा
तेरा अपना कहां बेगाना कहां, मन पंछी मन में बोल रहा
मुझे भाई मन की निठुराई, मन का विश्वास नहीं करना॥
अरदास यहीं तुमसे.......

चुप–चाप बहे क्यों जाते हैं, ये अश्क मुझे मालूम नहीं
हो मौन किनारे बैठा रहूं, क्यूँ भाए मुझको तन्हाई
पागलपन है या दीवानगी, बस मुझको साथ सदा रखना
अरदास यहीं तुमसे.......

मैं कैसे रिझांउगा तुमको, राधा सा मुझमें प्यार नहीं
मैं निर्बल दीन दुखी मोहन, मुझे तेरे सिवा आधार नहीं
'नन्दू' कर माफ खता मोहन, तुम मुझसे प्यार सदा करना
अरदास यहीं तुमसे.......